रोपाई

वर्षा ऋतु में जब खेत की मिट्टी में अच्छी नमी हो जाये, तब जुलाई–अगस्त माह में शंखपुष्पी के नर्सरी में तैयार किये गये पौधों की रोपाई 25 से.मी. x 25 से.मी. के अंतराल पर की जाती है। इस रोपण अंतराल पर प्रति हेक्टेयर रोपित पौधों की संख्या लगभग 1,60,000 होगी।

अंतर्रासस्यन

शंखपुष्पी के साथ गुग्गल के प्रायोगिक इंटर क्रॉपिंग में पाए गए है कि इन दोनों औषधीय प्रजातियों की खेती साथ–साथ की जा सकती है तथा इससे इन प्रजातियों की खेती साथ–साथ की जा सकती है तथा इससे इन प्रजातियों की बढ़त पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके अलावा बाजरा, ग्वार अथवा मूंग के साथ भी शंखपुष्पी का इंटर क्रॉपिंग किया जा सकता है।

सिंचाई

शुष्क मौसम में पांच दिनों के अंतराल पर सिंचाई से अधिकतम बढ़त तथा बायोमास उत्पादन पाया गया। वर्षाकाल में सिंचाई तभी की जानी चाहिए, जब आवष्यकता हो।

खरपतवार नियंत्रण

फसल के पूरे मौसम में 15 से 20 दिन के अंतराल पर हाथ से निदाई तथा कुदाली से गुड़ाई करनी चाहिए। इससे खरपतवार पर नियंत्रण रहेगा तथा मृदा वातन में वृद्धि से पौधों की बढ़त भी अच्छी होगी।

रोग एवं कीट नियंत्रण

प्रायः शंखपुष्पी की फसल पर कोई विशेष रोग अथवा कीट प्रकोप होना नहीं पाया गया।

कटाई (विदोहन)

शंखपुष्पी खरीफ की फसल है तथा यह वर्षाकाल के 4 माहों में अपना फसल चक्र पूरा कर लेती है। जुलाई माह में रोपित पौधे अपनी बढ़त सितम्बर–अक्टूबर तक पूर्ण कर लेते है तथा फसल कटाई का यही उपयुक्त समय है।

कटाई उपरान्त प्रबंधन (Post Harvest Management)

विदोहन उपरांत प्राप्त शंखपुष्पी के ताजे कटे पौधे शीघ्र नाशवान होते हैं। अतः उनको अच्छी तरह सुखाकर बोरों में भरकर विक्रय होने तक ठंड़े एवं शुष्क स्थान पर सुरक्षित भंण्डारण करना चाहिए। शुद्ध फसल के रूप में प्रति हेक्टेयर उत्पादन लगभग 150 क्विन्टल (ताजा भार) है जोसूखने के बाद एक तिहाई रह जाता है। शंखपुष्पी की खेती में प्रति हेक्टेयर लगभग 20 से 30 हजार रूपये की लागत आती है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
पादप कार्यिकी विभाग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726
ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

---

शंखपुष्पी

**(*Evolvulus alsinoides*
Convolvnlus prostrates Forsk.)**

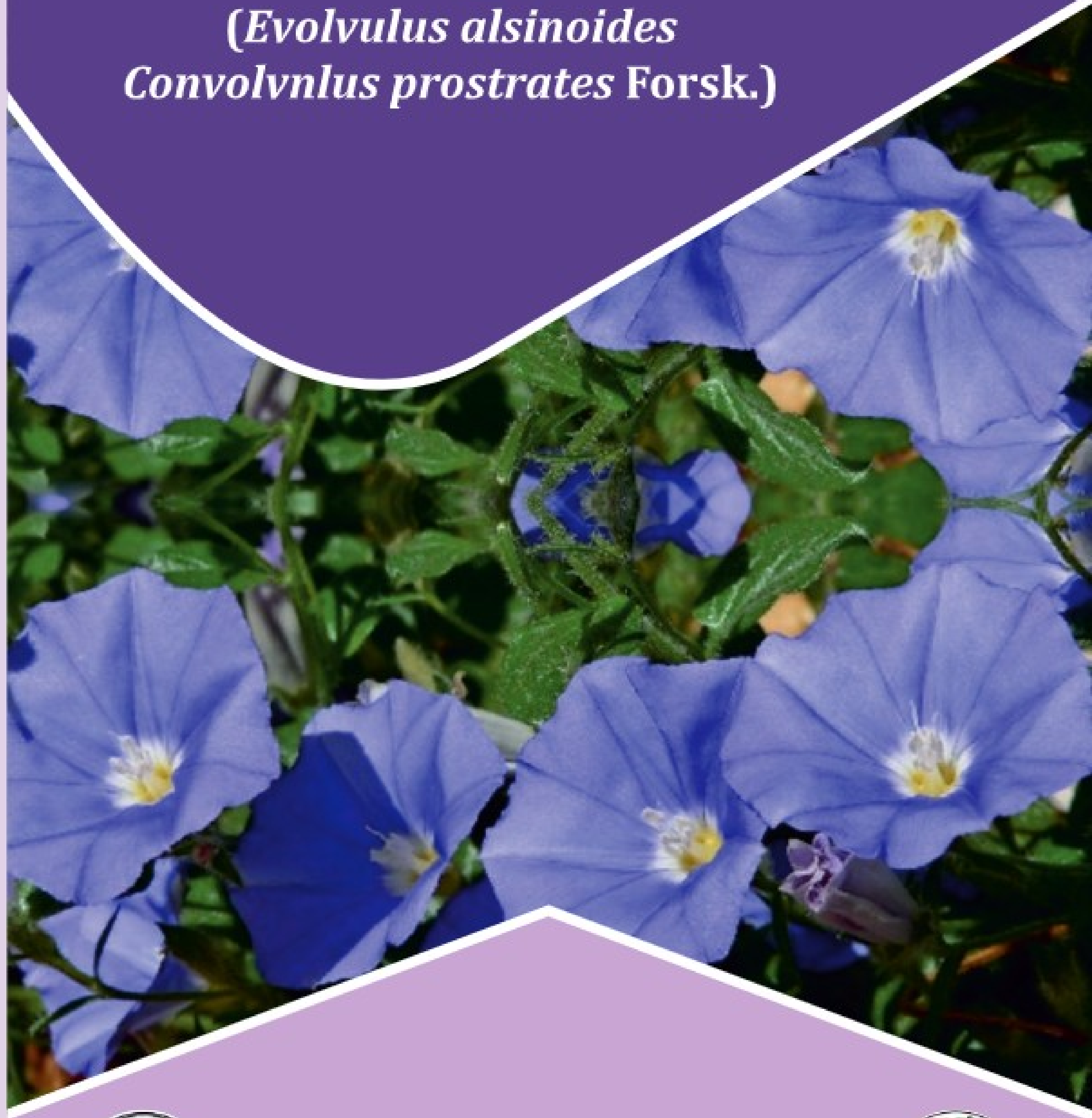

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और
हौम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार
2026

शंखपुष्पी

(*Evolvulus alsinoides*
Convolvnlus prostrates Forsk.)

कुल : कन्चल्वुलेसी (Convolvnlaceae)
संस्कृत नाम : क्षीरपुष्पी, मांगल्यकुसुमी
हिन्दी नाम : फूली, शरिखपुष्पी
अंग्रेजी नाम : इंग्लिश स्पीड व्हेल
(English Speed-Wheel)
आयुर्वेदिक नाम : शंखपुष्पी
व्यापारी नाम : शंखपुष्पी
उपयोगी भाग : सम्पूर्ण पादप पंचांग

शंखपुष्पी के सम्पूर्ण पादप से बनाये गये काढ़े का उपयोग स्नायुदौर्बल्य तथा स्मृतिहानि के उपचार में किया जाता है। यह पौधा रक्तशोधक के रूप में तथा खूनी बवासीर में भी उपयोगी है। मस्तिष्क टॉनिक के रूप में इसके फूलों को चीनी के खाथ खाया जाता है। पुराने श्वासनली तथा दमा के रोगियों को इसकी पत्तियों से बनी सिगरेटों के धूम्रपान से राहत मिलती है। इसके उपयोग से त्वचा में निखार तथा आवाज में भी सुधार होता है। यह आंतों के कीड़ों से छुटकारा दिलाता है तथा स्मरण शक्ति बढ़ाता है। शंखपुष्पी के पौधें में स्कोर्पोलीटीन, अम्बिलीफेरॉन (Scopoletin, Umbelliferone).जैसे यौगिक पाये जाते है।

वितरण

प्राकृतिक रूप से यह पौधा भारत में लगभग सभी जगह खुले क्षेत्रों तथा घास के मैदानों में पाया जाता है। मैदानी क्षेत्रों के अलावा यह हिमालय पर 1500 मीटर की ऊंचाई तक के क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगता हुआ पाया जाता है।

आकारिकी तथा लक्षण विज्ञान

यह एक बहुवर्षीय झाड़ी है। इसकी शाखायें जमीन पर सभी दिशाओं में फैल जाती है। इसके पत्रक 2.5 से 5 से.मी. लम्बे, दीर्घवृत्ताकार एवं आधार पर गोलाकार होते है। इसकी पत्तियां लम्बे, घने तथा फैले हुए सफेद बालों से ढ़ंकी होती है। प्रकृति में मानसून की दो–तीन बौछारों के पश्चात् जुलाई– अगस्त माहों में इसके पौधे निकल आते है। सामान्यतः किसी वृक्ष अथवा झाड़ी के छत्र के नीचे इसके पौधे प्रचुर संख्या में पाये जाते है। नवजात पादप पहले सीधे बढ़ता है तथा बाद में अगस्त माह के प्रथम सप्ताह के दौरान उसमें से पार्श्व शाखायें निकलने लगती है। ये पार्श्व शाखायें सभी दिशाओं में फैलने लगती है। अगस्त के प्रथम सप्ताह में ही पौधे में पुष्पन आरंभ हो जाता है। जो कि पूरे अगस्त माह तक चलता रहता है। इसी बीच अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह तक फल लगने प्रारंभ हो जाते है। बीजों का बिखरावन सितम्बर से दिसम्बर तक होता है। यह पौधा नम्बवर – दिसम्बर तक सूख जाता है।

पुष्पीय लक्षण

इसके पुष्प नीले, गहरे बैंगनी से श्वेत बैंगनी रंग के होते है तथा अक्षीय स्थिति में होते है। वे एक लम्बे डंठल पर एकाकी अथवा युग्म में लगे होते है। इसमें दो वर्तिकायें होती है। तथा प्रत्येक वर्तिका द्विशाखीय होती है। इसके फल गोलाकार होते है जिसके अंदर चार संपुटिकायें होती है जिसमें गहरे भूरे अथवा काले चिकने बीज होते है।

जलवायु एवं मृदा

यह पौधा छायादार स्थानों तथा आर्द्र जलवायु को पसन्द करता है। प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में इसकी वृद्धि धीमी हो जाती है तथा पौधो का विकास रूक जाता है। भारत के उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में 1800 मीटर की ऊंचाई तक इसकी खेती की जाती है।

प्रवर्द्धन सामग्री

शंखपुष्पी के पौधे बीज से तैयार किये जा सकते है। इसके प्राकृतिक पर्यावासों से अक्टूबर–नवम्बर माह में बीज संग्रहण किया जाना चाहिए।

कृषि तकनीक :

नर्सरी तकनिकी द्वारा पौध तैयार करना

शंखपुष्पी के बीज बेरी प्रकार का होता है। प्रत्येक बेरी में 4–6 बीज काले रंग के होते है। इसके बीज अत्यधिक हल्के होते है। नर्सरी में पौध भंडार तैयार करने के लिए पॉलीथिन थैलियों में सीधे उपचारित बीज बोये जा सकते है। प्रत्येक थैली में दो बीज बोना चाहिए। बीज 0.5 से.मी. गहराई पर बोये जाते है। बीज बुवाई जून–जुलाई में करनी चाहिए। प्लास्टिक के प्रयोग को रोकथाम करने के लिए पॉलीथिन थैलियों के स्थान पर पत्तों के दोनों में अथवा मिट्टी कुल्हडों का प्रयोग किया जा सकता है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में शंखपुष्पी की खेती के लिए उपचारित बीजों की लगभग 200 ग्राम मात्रा की आवष्यकता होती है।

क्षेत्र तैयारी

जिस प्रकार सब्जियों की खेती के लिए जुताई तथा पाटा कट भूमि को तैयार किया जाता है, उसी तरह शंखपुष्पी की खेती के लिए भी भूमि की तैयारी की जाती है। जुताई के पश्चात् पाटा चलाकर भूमि को समतल कर लेना चाहिए। रोपण के पूर्व क्षेत्र में उग रहे खरपतवार को हाथ से निंदाई–गुड़ाई कर पूरी तरह से निकाल देना चाहिए। अच्छी उपज के लिये खेत की मिट्टी में रोपण पूर्व ही 10 टन प्रति हेक्टेयर के मान से गोबर की सड़ी खाद/कम्पोस्ट/वर्मीकम्पोस्ट मिला देना चाहिए।